(ग) वाणिज्य वर्ग

व्यवसाय अध्ययन

कक्षा–12

भाग–1

(प्रबन्ध के सिद्धान्त और कार्य)

⇨ **प्रबन्ध की प्रकृति एवं महत्व** – प्रबन्ध का आशय, विशेषताएं, अवधारणाएं, उद्देश्य, महत्व, प्रकृति, स्तर, कार्य।

समन्वय– प्रबन्ध का सार, समन्वय की विशेषताएं, महत्व इक्कीसवीं सदी में प्रबन्ध।

⇨ **प्रबन्ध के सिद्धान्त** – अवधारणाएं, प्रकृति, महत्व। टेलर का वैज्ञानिक प्रबन्ध– आशय एवं सिद्धान्त, वैज्ञानिक प्रबन्ध की तकनीकि, फ्योल के प्रबन्ध के सिद्धान्त। टेलर एवं फ्योल के सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन।

⇨ **व्यावसायिक पर्यावरण** – आशय, विशेषताएँ, महत्व, आयाम। भारत का आर्थिक पर्यावरण– उदारीकरण, निजीकरण, भूमण्डलीकरण।

⇨ **नियोजन** – आशय, लक्षण, अवधारणाएँ, महत्व, सीमाएं, नियोजन प्रक्रिया, नियोजन के प्रकार।

⇨ **संगठन** – आशय, संगठन प्रक्रिया के चरण, महत्व। संगठन संरचना एवं प्रकार– कार्यात्मक संरचना एवं प्रभागीय संरचना (Divisional Structure), औपचारिक एवं अनौपचारिक संगठन। प्रत्यायोजन (Delegation)– आशय, तत्व, महत्व। विकेन्द्रीकरण– आशय, केन्द्रीकरण एवं विकेन्द्रीकरण, विकेन्द्रीकरण का महत्व।

⇨ **नियुक्तिकरण** – आशय, महत्व। मानवीय संसाधन प्रबन्ध का मूल्यांकन। नियुक्तिकरण प्रक्रिया। नियुक्तिकरण के पहलू– भर्ती, स्त्रोत, आन्तरिक स्त्रोत (आशय, गुण–दोष) बाह्य स्त्रोत। चयन– आशय एवं चयन प्रक्रिया, प्रशिक्षण एवं विकास, प्रशिक्षण विधि।

⇨ **निर्देशन** – आशय, महत्व, सिद्धान्त, तत्व।

पर्यवेक्षण– आशय एवं महत्व। अभिप्रेरण– आशय, लक्षण, प्रक्रिया, महत्व, वित्तीय एवं गैर वित्तीय प्रोत्साहन। नेतृत्व– आशय, लक्षण, महत्व, अच्छे नेतृत्व के गुण, नेतृत्व शैली। संचार– आशय, संचार प्रक्रिया के तत्व, महत्व, औपचारिक एवं अनौपचारिक संचार, संचार बाधाएं, संचार प्रभावशीलता में सुधार।

⇨ **नियन्त्रण** – आशय, महत्व, सीमाएं, नियोजन एवं नियन्त्रण में सम्बन्ध, नियन्त्रण प्रक्रिया, प्रबन्धकीय नियन्त्रण की तकनीकें (परम्परागत एवं आधुनिक), उत्तरदायित्व लेखांकन। प्रबन्ध

अंकेक्षण। कार्यक्रम मूल्यांकन और समीक्षा तकनीकि एवं गम्भीर पथ विधि (PERT and CPM)। प्रबन्ध सूचना प्रणाली

भाग–2

(व्यवसाय वित्त एवं विपणन)

⇨ **व्यावसायिक वित्त** – अर्थ। वित्तीय प्रबन्ध एवं भूमिका, उद्देश्य। वित्तीय निर्णय। वित्तीय नियोजन– आशय एवं महत्व। पूँजी संरचना एवं प्रभावित करने वाले कारक, स्थायी एवं कार्यशील पूँजी। कार्यशील पूँजी की आवश्यकता को प्रभावित करने वाले कारक।

⇨ **विपणन** – आशय, विशेषताएं, विपणन प्रबन्ध, विपणन एवं विक्रय, विपणन की अवधारणाएं, विपणन के कार्य, विपणन की भूमिका। विपणन मिश्र एवं तत्व। उत्पाद– आशय एवं वर्गीकरण। ब्राडिंग– आशय, लाभ, अच्छे ब्राडिंग की विशेषताएं। संवेष्ठन (पैकेजिंग)– आशय, स्तर, महत्व, कार्य। लेवलिंग– आशय एवं कार्य। मूल्य निर्धारण– आशय एवं निर्धारक तत्व। वितरण माध्य एवं कार्य। माध्यों के प्रकार, वितरण माध्य के चयन के निर्धारक तत्व। भौतिक वितरण– आशय एवं घटक। प्रवर्तन, प्रवर्तन मिश्र। विज्ञापन– आशय, विशेषताएं, लाभ सीमाएं, उद्देश्य। वैयक्तिक विक्रय– आशय, विशेषताएं, लाभ, महत्व। विक्रय संवर्धन– आशय, लाभ सीमाएं, विज्ञापन एवं वैयक्तिक विक्रय में अन्तर। प्रचार– आशय एवं विशेषताएं।

⇨ **उपभोक्ता संरक्षण** – आशय, महत्व, उपभोक्ताओं के कानूनी संरक्षण, उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 (परिचय, उपभोक्ताओं के अधिकार, दायित्व), उपभोक्ता संरक्षण के तरीके एवं साधन, उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अन्तर्गत शिकायत निवारण एजेन्सियां।

⇨ **उद्यमिता विकास** – आशय, विशेषताएं, उद्यमिता की अवधारणाएं, आवश्यकता, उद्यमिता एवं प्रबन्धन के बीच सम्बन्ध, उद्यमियों के आर्थिक विकास से जुड़े कार्य, उद्यमिता विकास की प्रक्रिया, उद्यमिता विकास में व्यक्ति की भूमिका, उद्यमीय उपयुक्तता, उद्यमीय अभिप्रेरणा, उद्यमिता मूल्य एवं दृष्टिकोण।